# **घाघीडीह प्रेक्षण गृह कार्यशाला**

**24 - 26 फरवरी 2023**
**प्रेक्षण गृह, घाघीडीह, जमशेदपुर**

हर साल की तरह जब Let's Make A Difference ( Let's Make A Difference ) की टीम नवंबर 2022 में यूथ कॉन्फ्रेंस करने जमशेदपुर आई, तब कांफ्रेंस शुरू होने के पहले Let's Make A Difference की टीम ने घाघीडीह निरीक्षण गृह, जहा विभिन्न अपराधों के लिए रखे गए १८ साल या उससे कम आयु के बच्चों से मुलाकात की।

निरीक्षण गृह के बच्चों के साथ बिताए उन कुछ घंटों मैं Let's Make A Difference कि टीम को उन बच्चों के जीवन की झलक, उनके द्वारा किए गए अपराध और उनकी वजहो को जानने समझने का मौका मिला।

इतनी कम उम्र में जाने-अनजाने, कई छोटे और जघन्य अपराधो के संबंध में आ बैठे, उन बच्चों की अवस्था को देखते हुए Let's Make A Difference की पूरी टीम को उनको IofC (इनीशिएटिव्स ऑफ चेंज) संस्था के सिद्धांतों और नैतिक मूल्यों को सिखाने और उनके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ले आने की तीव्र आवश्यकता महसूस हुई।

आगे कुछ महीने इस ख्याल पर काम करते हुए और (JWC) जमशेदपुर वूमंस क्लब के सहयोग से Let's Make A Difference की टीम को 24 फरवरी 2023 से 26 फरवरी 2023, ये 3 दिनों के लिए घाघीडीह निरीक्षण गृह के बच्चों के लिए कार्यक्रम करने की अनुमति प्राप्त हो गई।

**DAY 1**

कार्यक्रम करने के लिए Let's Make A Difference के मुख्य संयोजक श्री विरल मजूमदार, अपनी जमशेदपुर और भिन्न शहरों से आए कार्यकर्ताओं की टीम के साथ 24 फरवरी कि सुबह दस बजे निरीक्षण गृह पहुंच गये। कार्यक्रम में योगदान देने आए कार्यकर्ताओं में से अधिकांश लोग पहली बार इस निरीक्षण गृह में आ रहे थे।

Let's Make A Difference की टीम के लिए यह कार्यक्रम अब तक किए गए विभिन्न स्कूल और कॉलेजेस से बिल्कुल अलग और चुनौतीपूर्ण था।

चुकीं यह एक निरीक्षण गृह था इसलिए बहुत सारी सुरक्षा और प्रवेश प्रक्रिया का पालन करने के बाद Let's Make A Difference की टीम को निरीक्षण गुह मैं प्रवेश करने की अनुमति दी गई।

आम जिवन से बिल्कुल भिन्न, उस जगह का आभामंडल काफी अलग और वहां के माहौल में घुले भारीपन को महसूस किया जा सकता था।

निरीक्षण गुह में आते ही कुछ देर में Let's Make A Difference की टीम को, लगभग 70 बच्चों से भरी एक क्लास रूम में प्रवेश कराया गया। अगले 3 दिनो मे होने वाले कार्यक्म को लेकर बच्चों की आंखों में उत्सुकता और ढेरों सवाल साफ नजर आ रहे थे। कार्यक्रम में भाग ले रहे हैं, उन बच्चों में एक बच्चा 8 साल का भी है,

यह जानकर टीम को जितना ताज्जुब हुआ उससे कई ज्यादा दुख हुआ। पढ़ने- लिखने, खेलने-कूदने कि मासुम उम्र के बच्चो को ऐसी जगह में देखना काफी चिंताजनक था।

अगले 3 दिनों में होने वाले कार्यक्रम के द्वारा इन बच्चों की सोच में परिवर्तन और स्पष्टता लाने के लिये, अपनी भुमिका के महत्व और जिम्मेदारी को समझते हुए Let's Make A Difference की टीम ने, जमशेदपुर वूमेंस क्लब (JWC) और निरीक्षण गुह की वार्डन के साथ मिलकर दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए  विरल सर  ने कार्यक्रम के पहले और सबसे महत्वपूर्ण सत्र "शांत समय" के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि, शांत रहने और अपने मन से आ रही आवाज और उससे मिलते विचार को सुनकर, अगर  हम बताए गए मार्ग पर चले, तो कैसे हम हर परिस्थिति में सही निर्णय ले सकते हैं और जीवन के हर क्षेत्र में प्रगति कर सकते हैं। आगे उन्होंने  बताया कि, वो कैसे कई वर्षो से रोज सुबह शांत समय के नियमीत अभ्यास से, अपने जीवन में सुखद परिवर्तन लाने मे सफलता अर्जित कर पाए हैं।

इस के बाद टीम ने सभी बच्चों मे एक-एक डायरी और पेन बांट दिए और उन्हें अगले 30 मिनट के लिए बिना किसी से बातचीत कीए, शांत समय कि इस प्रक्रिया का अभ्यास करने के लिए, उस कमरे से बाहर जाकर खुले परिसर में भेज दिया गया।

शांत समय के सत्र को सुनकर प्रभावित हुए कुछ बच्चे अपनी डायरी में तल्लीन होकर लिखते हुए दिखाई दिए। तो कुछ बच्चे ऐसे भी थे जिनके लिए  5 मिनट भी शांत रहकर आत्म निरीक्षण करना बहुत मुश्किल कार्य था। और कुछ ऐसे बच्चे भी थे जो लिखना तो चाहते थे पर लिखना नहीं जानते थे। ऐसे बच्चों के लिए उनके विचारों को उनकी डायरी में लिखकर देते हुए, Let's Make A Difference टीम के कार्यकर्ताओं ने सहायता की।

आधे घंटे बाद सभी बच्चों को वापस क्लास रूम में बुला लिया गया। क्लास रूम में लौटने के बाद विरल सर ने बच्चों से आगे आकर अपने विचार सभी के साथ साझा करने का आ गृह किया।

पहला दिन होने से काफी लोग अपने शर्म और झिझक के कारण आगे नहीं आये पर उनमें से कुछ बच्चों ने अपना अनुभव और विचार सबके सामने व्यक्त किए।

उनमें से जो विचार व्यक्त किये गये वे नीचे लिखे है

1. मुझे यहा 2 साल के ऊपर हो गए हैं। मां की बहुत याद आती है। मैं यहां से बाहर निकल कर मां की सेवा करना चाहता हूं और एक अच्छा नागरिक बनना चाहता हूं |
2. मैंने अपने परिवार का दिल दुखाया है। मुझे इस बात का पछतावा है। मैं यहां से निकल कर पढ़ाई करना चाहता हूं और एक जिम्मेदार इंसान बनना चाहता हूं।

कुछ और बच्चों के विचारों को सुनने के बाद दोपहर के भोजन के लिए कार्यक्रम को कुछ देर के लिए विराम दिया गया।

T : (02168) 240241/2 | E : IOFC.LMAD@GMAIL.COM | W : WWW.LMAD.IN / WWW.IN.IOFC.ORG
ASIA PLATEAU, PANCHGANI - 412 805, DIST. SATARA, MAHARASHTRA

REGISTERED IN 1961 UNDER THE BOMBAY PUBLIC TRUST ACT, 1950. MEMBER INITIATIVES OF CHANGE - INTERNATIONAL

भोजन के बाद सभी बच्चे, विरल सर द्वारा कार्यक्रम के दूसरे सत्र ABC of MRA मे भाग लेने के लिए एकत्रित हुए। इस सत्र में विरल सर ने IofC के चार सिद्धांत ईमानदारी, पवित्रता, निस्वार्थता और प्रेम के बारे में बताना शुरु किया।

ईमानदारी, इस सिद्धांत को समझाने की शुरुआत करते हुए, विरल सर ने अपने जीवन से कुछ उदाहरण देकर, बच्चों को यह समझाने का प्रयास किया, सत्य और ईमानदारी के मार्ग पर चलना मुश्किल ज़रूर है, पर अंत में जीत इसी मार्ग पर मिलती है। उन्होंने ईमानदारी के महत्व को आगे समझाते हुए, यह कहा कि दुनिया में एक बेईमान इंसान भी चाहता है कि उसके लिए जो काम करे वह ईमानदार हो। उन्होंने यह भी बताया कि कैसे  कई बार इस मार्ग पर चलते हुए, उन्हें भी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है पर उनकी शांत समय के अभ्यास से और अपनी अंतरात्मा की आवाज से जुड़े रहने से हमेशा सही मार्गदर्शन, सही वक्त पर मिल जाता है और वह इसी  रास्ते पर टिके रहने मैं सफल हो जाते हैं।

इस प्रभावशाली सत्र के बाद, पहले से ही तैयार की गई लिस्ट के अनुसार बच्चों को ४ समूह में 17-18 की संख्या में, विभाजित कर दिया गया और संबंधित समूह को संभालते कार्यकर्ता के साथ  सामूहिक चर्चा के लिए कमरे से बाहर परिसर में भेज दिया गया।

सामूहिक चर्चा के दौरान कार्यकर्ताओं ने बच्चों से उनकी जीवन कथा और सुबह से हुए दोनों सत्रों के बारे मे चर्चा की।

बताए गए समय के अनुसार सारे वापस उसी क्लास रूम बच्चे में लौट आए। कुछ बच्चों ने अनुरोध किए जाने पर अपना अनुभव और विचार आगे आकर सबके सामने साझा कीए।

1. एक बच्चे ने कहा कि वह अपने किए पर शर्मिंदा है। वह बहुत शराब पिया करता था। नशे की लत और अपनी गलत संगत की वजह से वह इस जगह पर पहुंच गया। उसने कहा कि वह बहुत दुखी था क्योंकि उसके परिवार से अब उसे कोई मिलने नहीं आता था। वह चाहता था कि वह अब जब भी बाहर निकलेगा तो कभी भी उस रास्ते पर नही चलेगा, जो उसे फिर यहां ले आए।

२. दूसरे लड़के ने कहा कि उसके पिता एक किसान है। वह बुजुर्ग है और उन्हें उस कि आज ज़रुरत है। वह बाहर जाकर अपने पिता का हाथ बटाना चाहता है। उसे गाने लिखने का भी शौक है और आगे जाकर एक अच्छा गीतकार भी बनना चाहता है।

संध्या का समय हो चुका था, निरीक्षण गुह के नियम और समय के अनुसार Let's Make A Difference की टीम ने अपने पहले दिन के कार्यक्रम का समापन, सफलतापूर्वक किया।

**DAY 2**

अगले दिन Let's Make A Difference की टीम लगभग 10:00 बजे के करीब निरीक्षण  गृह पहुंची। टीम को प्रवेश करता है देख निरीक्षण  गृह के बच्चे काफी उत्साहित थे। बच्चों को आज उसी क्लास रूम में अपने अपने समूह के साथ बिठाया गया।

विरल सर ने दूसरे दिन के कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए, शांत समय और ईमानदारी के महत्व को दोबारा और गहराई में समझाने का प्रयास किया।

लगभग एक से डेढ़ घंटे के सुबह के सत्र के बाद, बच्चों को पिछले दिन के ही तरह बाहर परिसर में खुद के साथ, अकेले शांत रहते हुए हैं, मन मे आते विचारों को सुनने और उन्हें दी गई डायरी में लिखने के अभ्यास के लिए भेजा गया। पिछले दिन के मुकाबले आज बच्चे काफी शांत, गंभीरता और अनुशासन के साथ अपनी डायरी में लिखते हुए दिखाई दिए।

35 मिनट के बाद, बच्चों को वापस उसी क्लास रूम में बुला लिया गया। कल और आज के सत्रों का बच्चों पर काफी अच्छा प्रभाव पड़ा था। जब उन्हें अपने अनुभव या विचार साझा करने के लिए आमंत्रित किया गया तो पिछले दिन के मुकाबले आज काफी बच्चे बोलना चाहते थे।

मंच पर जो उन्होंने अपना अनुभव साझा किया, उससे यह साफ अंदाजा लगाया जा सकता था की, वह बच्चे अब शांत समय के द्वारा आत्म चिंतन व आत्म निरीक्षण के मार्ग पर चलकर, परिवर्तन के लिए तैयार हो रहे थे।

बच्चों ने अपने विचार जो सबके साथ क्लास रूम में सांझा किये वो कुछ इस प्रकार थे।

एक लड़के ने बताया कि कैसे उसके पिता की मृत्यु के बाद, मां पर बढ़ते आर्थिक दबाव और घर की जिम्मेदारी को संभालने हेतु, उसने, अपना स्कूल छोड़,  कोई कामकाज करके कुछ पैसे कमाने का निर्णय ले लिया था। उसकी मां चाहती थी कि वह पढ़े पर वह नहीं माना। बर्तन धोने के अपने पहले काम के जरिए वह पंद्रह सौ रुपए महीना कमाने लगा था। धीरे-धीरे वह खाना बनाना सीखा और उसे अपने एक दोस्त की मदद से रांची में खाना बनाने के लिए ₹10000 प्रति माह की नौकरी प्राप्त कर ली। कई महीने से वह घर नहीं लौट था। उसकि मां उसे बहुत याद करती। उसे भी अपनी मां की बहुत याद आती है।

वह जल्द ज्यादा से ज्यादा पैसे कमा कर अपनी मां के पास लौटना चाहता था। इसी जल्दबाजी के चलते, वह एक गलत कदम ले बैठा और उसे इस निरीक्षण  गृह में आना पड़ गया। खुद से यह वादा किया कि वह आगे कभी भी किसी ऐसे मार्ग पर नहीं चलेगा, जो उसे और उसके परिवार को किसी भी मुश्किल में डाल दे।

२. दूसरे लड़के ने यह कहा कि उसने अपने शांत समय में, अपने पिताजी के लिए एक पत्र लिखा है। जिसमें, उसने अपने पिताजी से अपनी की गई गलती पर पछतावा जताते हुए, माफी मांगी है।

और कुछ अनुभव साझा होने के बाद बच्चों और Let's Make A Difference की टीम ने दोपहर के भोजन के लिए कुछ देर का विराम लिया।

तय किए गए समय अनुसार Let's Make A Difference की टीम और सभी बच्चे उसी क्लासरूम में एकत्रित हुए। कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए Let's Make A Difference कार्यकर्ता, सोनू अरोरा ने रूम में रखें टेलीविजन पर रामायण के सीता हरण अध्याय का वीडियो दिखाकर, अपने सत्र की शुरुआत की।

उस वीडियो क्लिप को दिखा कर, सोनू ने यह बताने का प्रयास किया की, जिस तरह उस सुनहरे मृग के जरिए, राक्षस रावण के रचे मायाजाल में, राम, लक्ष्मण फस कर सीता को गवा बैठे थे। उसी तरह हम लोग भी

न जाने, उस सुनहरे मृग स्वरूप, न जाने अलग-अलग चीजों को पाने भागते हुए किसी ना किसी शैतान के मायाजाल में फसकर, अपनी शायद सबसे कीमती चीज गवा बैठते हैं।

उन बच्चों को यह समझाते हुए कि, उन्होंने भी शायद एक गलत चुनाव, एक गलत रास्ता, या गलत चीज को पाने के लिए अपनी आजादी गवा बैठी।

रावण कभी भी सीता हरण नहीं कर पाता, अगर सीता के पास राम और लक्ष्मण उपस्थित होते। ठीक उसी तरह हम भी, जब अपने परिवार, गुरु जन, अपने सच्चे मित्रों से जब, दूर हो जाते हैं या कर दिए जाते हैं, तभी हमारे जीवन के राक्षस नशे, गलत संगत या ऐसे ही किसी भी रूप में हमारे जीवन में प्रवेश कर लेते हैं।

अपने जीवन में अपने शुभचिंतक, परिवार का साथ कभी भी ना छोड़ने और अपने विवेक का उपयोग करते हुए, उस सुनहरे मृग की तरह, आकर्षित करती किसी भी गलत चीज के पीछे ना भागे, वरना परिणाम बुरा होगा। यह संदेश देते हुए सोनू ने अपना सत्र पुरा किया।

इस सत्र के बाद पिछले दिन की तरह सभी बच्चों को उनके अपने अपने समूह में चर्चा के लिए भेज दिया गया। समूह में बच्चों से सुबह हुए, शांत समय, ईमानदारी और दोपहर सीता-हरण सत्र के बारे में चर्चा की गई। चर्चा के दौरान, काफी बच्चों ने अपनी जिंदगी के रावण के बारे में अपने अनुभव साझा किए।

तय किए गए समय अनुसार सभी समूह क्लास रूम में लौट आए। क्लासरूम में लौटाने पर, सभी बच्चों को एक कोरा कागज का टुकड़ा देकर अनुरोध किया गया कि, वह उस कागज पर अपनी सकारात्मक इच्छा या वादा लिखे जो वह करना चाहते हैं। लिखने के लिए दिए गए कुछ वक्त के बाद, उन बच्चों से वह कागज का टुकड़ा ले लिया गया।

इस प्रक्रिया के बाद दूसरे दिन का कार्यक्रम भी सफलतापूर्वक समाप्त हुआ।

**DAY 3**

कार्यक्रम के अंतिम दिन Let's Make A Difference की टीम लगभग 10:00 बजे के करीब निरीक्षण गुह पहुंची। बच्चे, Let's Make A Difference की टीम को देखकर काफी खुश और उत्साहित थे। बच्चे खुशी में काफी शोर कर रहे थे|

अंतिम दिन के कार्यक्रम में भाग लेने के लिए, क्लास रूम में अंदर आते बच्चों को, बाहर दीवार पर, बड़े से दो कागज पर चिपकाए, उन्हीं के द्वारा, पिछले दिन लिखें, सभी के सकारात्मक इच्छाओं के कागज के टुकड़ों देखकर, बहुत आनंद हुआ।

कार्यक्रम की शुरुआत करने के पहले, Let's Make A Difference की टीम को यह जानकर खुशी हुई की, दो बच्चे पिछली रात रिहा हो चुके है पर साथ ही यह भी पता चला की, दो नए बच्चे उसी दिन सुबह निरीक्षण गुह में भर्ती कराए गए हैं।

Let's Make A Difference की टीम को यह जानकर बहुत धक्का लगा की उन २ बच्चों में से एक 17 वर्षीय बच्चा अपने मां के कत्ल के लिए वहां लाया गया था। अंतिम दिन के कार्यक्रम की शुरुआत विरल सर ने "जार की सफाई" इस सत्र से की।

इस सत्र में उन्होंने एक पारदर्शी कांच का जार, सब को दिखाया, जो कि बाहर से सुंदर फूलों से सजा हुआ दिखाई देता

तो था, पर उसके अंदर जो पानी था वह मटमैला और अधिकांश नकारात्मक दूषित चीजों से भरा हुआ था।

उस जार के माध्यम से विरल सर ने यह समझाने का प्रयास किया, कि कैसे हम सब लोग भी ज्यादातर अपनी बाहरी सतह पर ही साफ और सुंदर दिखने की उधेड़बुन में लगे रहते हैं। और इस झूठी रखरखाव के चलते हम अपने अंदर कई तरह के विषैले पदार्थ, बुरी आदतें, टूटे रिश्ते का कुड़ा इकट्ठा कर लेते हैं। यही कारण है कि हम अपनी जिंदगी में सुखी और खुश नहीं रह पाते।

इस सत्र के माध्यम से उन्होंने यह समझाया की बाहरी झूठी साज-सज्जा से ज्यादा महत्वपूर्ण है, इंसान का अंदर से साफ होना। साथ में उन्होंने यह समझाया कि इस सफाई के रास्ते का सबसे बड़ा रोड़ा है, इंसान का अपना अहंकार। इंसान अपने अहंकार को मार नहीं सकता पर उसे छोटा जरूर कर सकता है।

पिछले 2 दिनों में हुई चर्चा के दौरान, अधिकांश बच्चों की जीवन कहानी को समझते हुए, टीम के सामने यह निष्कर्ष निकल कर आया था की, बच्चों को आसानी से मिल जाने वाले नशीले पदार्थ का सेवन और उनके अनियंत्रित गुस्से कि वजह से, ही वे अपराधी वृत्ती के होते जा रहे थे।

विरल सर ने "जार की सफाई" के सत्र में इन दोनों कारणों को बखूबी और सही उदाहरणों के साथ बच्चों को समझाने का प्रयास किया। आगे सत्र के दौरान विरल सर ने, विचारों की पवित्रता के बारे में समझाते हुए, उस सुबह बच्चों द्वारा लड़कियों को देखकर , सीटी बजाकर की गई बदतमीजी की कड़ी आलोचना की।

सत्र की समाप्ति के बाद बच्चों को रोजाना की तरह उस दिन भी शांत समय के लिए, बाहर परिसर में भेज दिया गया। बाहर का नज़ारा पहले दिन से बिल्कुल विपरीत था। उस दिन शायद ही कोई ऐसा था, जो अपनी डायरी में लिख ना रहा हो या Let's Make A Difference के कार्यकर्ताओं की मदद से, अपनी डायरी में अपने विचार ना लिखवा रहा हो।

तय किए गए समय में सारे बच्चे क्लास रूम में एकत्रित हुए। नियम अनुसार विरल सर ने, बच्चों को आगे आकर अपना अनुभव साजा करने के लिए कहा। जिसमें बच्चों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया।

एक बच्चे ने सबके सामने यह स्वीकारा की, सुबह उसी ने लड़कियों को देखकर सीटी मारी थी। जिसके लिए वह बेहद शर्मिंदा है और लड़कियों से माफी मांगना चाहता है। यह कहते हुए उसने बताया कि, कैसे उसने कई बार आत्महत्या करने की कोशिश की है। उसकी कलाई पर ब्लेड और कई नुकीली चीजों से बने घाव, उसकी सत्यता के प्रमाण थे। परंतु कैसे बीते 3 दिन के कार्यक्रम के बाद, उसके मन में सकारात्मक सोच का निर्माण हुआ है और आने वाली जिंदगी जीने को लेकर, वह प्रेरित हुआ है।

T : (02168) 240241/2 | E : IOFC.LMAD@GMAIL.COM | W : WWW.LMAD.IN / WWW.IN.IOFC.ORG
ASIA PLATEAU, PANCHGANI - 412 805, DIST. SATARA, MAHARASHTRA

REGISTERED IN 1961 UNDER THE BOMBAY PUBLIC TRUST ACT, 1950. MEMBER INITIATIVES OF CHANGE - INTERNATIONAL

दूसरे बच्चे ने बताया कि, कैसे वह एक आईपीएस ऑफिसर बनना चाहता था। यह सपना उसके पिताजी ने उसके मन में संजोया था। जिसके लिए वह बहुत मेहनत भी करता था। इसमें उसके भाई, उसका सहयोग करता था। परंतु कैसे कुछ गलत कदम उठाने की वजह से उसे इस निरीक्षण गृह में आ जाना पड़ा।

उसने बताया कि कैसे उसने निरीक्षण गृह से ही उसने, अपनी 11वीं की परीक्षा की तैयारी की और वहीं से परीक्षा 62 परसेंटेज मार्क्स से पास भी की। उसने बताया कि इस कार्यक्रम के बाद वह और भी अधिक सकारात्मक और प्रेरित हो चुका है। इस निरीक्षण गृह के बाहर जाने के बाद वो बहुत मन लगाकर पड़ेगा और कैसे एक दिन, आईपीएस ऑफिसर बनकर दिखाएगा।

इस सत्र को अंत करने के पहले, बच्चों को एक और कोरा कागज टुकड़ा दिया गया और इस बार, उनसे उस कागज पर वह नकारात्मक चीज, आदत या सोच, जो वह अपनी जिंदगी से निकाल फेंकना चाहते हैं, उसे लिखने के लिए कहा गया।

बच्चों ने काफी सोच कर, अपने कागज के टुकड़े पर वह लिख दिया। जिसके बाद, बच्चों को अपने समूह के साथ कार्यकर्ता बाहर खुले परिसर में ले गए, जहां पर एक जगह आग जलाई गई थी। उस जलती आग में, उन सभी बच्चों को वह कागज के टुकड़े को डालकर, उस पर लिखी चीज को भस्म होता देखने के लिए कहा गया। इस प्रक्रिया के बाद बच्चों के चेहरे पर एक अलग खुशी और राहत दिखाई दि।

कुछ देर बाद Let's Make A Difference की टीम और बच्चों ने भोजन के लिए विराम लिया।

तय किए गए समय के अनुसार, सारे बच्चे क्लासरूम में एकत्रित हुए और इस कार्यक्रम के आखरी समूह चर्चा के लिए उन्हें अपने समूह के साथ भेज दिया गया।

समूह की अंतिम चर्चा काफी गंभीर थी, क्योंकि अधिकांश बच्चे तीसरे दिन तक खुल गए थे। बच्चे, Let's Make A Difference कार्यकर्ताओं से व्यक्तिगत रूप से बात करना चाहते थे। Let's Make A Difference कार्यकर्ताओं ने भी यह महसूस किया कि, वह वास्तव में अपने अपराधों के लिए खुद को दोषी मानते थे। अपनी गलती समझना और सुधारना चाहते थे। वह वास्तव में खुद को बदलने के लिए, कदम आगे बढ़ाना चाह रहे थे।

उनमें से काफी लोगों ने इनीशिएटिव्स ऑफ चेंज Let's Make A Difference, पंचगनी सेंटर, एशिया प्लेटो में आने की भी इच्छा जाहिर की। अंतिम दिन वास्तव में मार्मिक और बहुत शक्तिशाली था क्योंकि Let's Make A Difference की पूरी टीम महसूस कर सकती थी, की वे अधिकांश बच्चों के साथ वे जुड़ पाए थे।

कुछ देर बाद कार्यक्रम अपने अंतिम चरण, समापन की ओर बड़ा। कार्यक्रम का समापन Let's Make A Difference की कार्यकर्ता तनु ने किया। तनु ने समापन कार्य क्रम में उपस्थित, जमशेदपुर वूमंस क्लब (JWC)की अध्यक्ष, श्रीमती रीना वेदागिरी और अन्य सदस्य का स्वागत किया। उनके साथ डीसी ऑफिस से आए, श्री रवि और श्री सुनील का भी स्वागत किया गया।

समापन समारोह के दौरान, कुछ बच्चों ने अपना अनुभव साझा किया। उन्होंने बताया कि कैसे जार एक्सरसाइज, शांत समय और चार मूल्य, सिद्धांतों ने उन्हें सही रास्ता दिखाया है। उन्होंने यह भी स्वीकारा कि,



REGISTERED IN 1961 UNDER THE BOMBAY PUBLIC TRUST ACT, 1950. MEMBER INITIATIVES OF CHANGE - INTERNATIONAL

कैसे उन्हें इस कार्यक्रम के माध्यम से निरीक्षण गुह के बाहर जाकर जीवन जीने की आशा मिली है। किसी ने यह भी कहा कि, उन्हें इस कार्यक्रम के द्वारा होने अपने आप में एक अंतर्दृष्टि और जीवन के लिए एक योजना मिली है।

समापन कार्यक्रम के अंतिम चरण में, सभी बच्चों को JWC के सदस्यों, अध्यक्ष और डीसी ऑफिस से आए अधिकारी, निरीक्षण गुह के वार्डन के द्वारा प्रमाण पत्र वितरण किए गए।

JWC की ओर से Let's Make A Difference की टीम के सभी कार्यकर्ताओं को एक स्मृति चिन्ह भेंट किया गया।

कार्यक्रम के अंत में निरीक्षण गृह के बच्चों को, Let's Make A Difference की टीम ने खेलने के लिए कुछ गेंदे, फ्रिजबी और कूदने के लिए रस्सी का वितरण किया। यह सब सामान देखकर बच्चों के चेहरे की खुशी देखते ही बनती थी।

3 दिन पहले इन बच्चों के चेहरे पर जो उदासी, नाराजगी और परेशानी दिखाई दे रही थी, वह काफी हद तक बदल कर एक उम्मीद की शक्ल ले चुकी थी। आने वाली जिंदगी में, यह बच्चे अपनी गलती सुधार कर एक अच्छे नागरिक बन सके इसी विचार के साथ Let's Make A Difference की टीम ने उनसे अलविदा लिया और अपने कार्यक्रम का पूर्ण समापन सफलतापूर्वक किया।

निरीक्षण गृह से निकलकर, Let's Make A Difference की टीम, वहीं पास में ही एक अनाथालय गई। जहां वहां के बच्चों को खेल के उपकरण फल और जूस बांटे गए। विरल सर और जमशेदपुर वूमंस क्लब की अध्यक्ष और सदस्यों ने उन बच्चों के साथ काफी बात की और कुछ देर बाद सब ने उन्हें अलविदा कहा।

---

**Translation of the Report on the Ghaghidih Observation Home Workshop, 24 - 26 February, 2023:**

Like every year, Let's Make A Difference team came to Jamshedpur to conduct a youth conference in November 2022, before the start of the conference, the Let's Make A Difference team visited the Ghaghidih Observation Home, where people aged 18 years or below were kept for various crimes.

Those few hours spent with the children of the observation home gave the Let's Make A Difference team a glimpse into their lives, the crimes committed by them and the reasons behind them.

Knowingly or unknowingly at such a young age, they have come in relation to many small and heinous crimes, considering the condition of these children, the entire team of Let's Make A Difference has been asked to teach them the principles and moral values of IofC (Initiatives of Change) organization and inculcate them in their lives. There was an urgent need to bring positive change.

Further working on this idea for a few months and in collaboration with (JWC) Jamshedpur Women's Club, the Let's Make A Difference team got permission to organize a program for the children of Ghaghidih Observation Home for 3 days from 24 February 2023 to 26 February 2023.

Mr. Viral Majumdar, the chief convenor of Let's Make A Difference, along with his team of volunteers from Jamshedpur and other cities, reached Observation Home at 10 am on February 24 to conduct the programme. Most of the volunteers who came to contribute to the program were coming to this observation home for the first time.

For the team of Let's Make A Difference, this program was completely different and challenging.

Completely different from the common life, the aura of that place was quite different and the heaviness in the atmosphere could be felt.

Shortly after arriving at the observation home, the Let's Make A Difference team was ushered into a classroom filled with approximately 70 inmates. Curiosity and many questions were clearly visible in the eyes of the children regarding the program to be held in the next 3 days. The team was more saddened than surprised to learn that one of the children participating in the program is an 8-year-old. It was very worrying to see children of the innocent age of reading, writing, playing and jumping in such a place.

Realizing the importance and responsibility of their role, the Let's Make A Difference team, along with the Jamshedpur Women's Club (JWC) and the Warden of the observation Home, organized a program to be held over the next 3 days to bring change and clarity in the thinking of these children.

Let's Make A Difference inaugurated the program by lighting the lamp.

Taking the program forward, Viral Sir talked about the first and most important session of the program "Quiet Time". He explained how, by staying calm and listening to the voice coming from within, if we follow the path shown, how we can take the right decision in every situation and progress in every area of life. He further explained how, over the years, he has been able to bring about pleasant changes in his life through regular practice of quiet time every morning.

After this the team distributed a diary and pen to each child and sent them out to the open area to experience the process of quiet time without talking to anyone for the next 30 minutes.

Impressed by listening to the quiet time session, some children were seen engrossed in writing in their diaries. There were some children for whom it was a very difficult task to remain calm and self-observe even for 5 minutes. And there were some children who wanted to write but did not know how to write. Let's Make A Difference team volunteers assisted such children by penning their thoughts down in their diaries.

After half an hour all the children were called back to the classroom. After returning to the classroom, the children were urged to come forward and share their thoughts with everyone.

It being the first day, many people did not come forward due to their shyness and hesitation, but some of them expressed their experiences and views in front of everyone.

The views expressed by them are written below.

1. I have been here for more than 2 years. I miss my mother very much. I want to get out of here and serve my mother and be a good citizen.

2. I have hurt my family. I regret it. I want to leave here and study and become a responsible person.

After listening to the thoughts of some more children, the program was briefly paused for lunch.

After the meal, all the children gathered to participate in the second session of the program, ABC of MRA. Session started by talking about the four principles of IofC: Honesty, Purity, Unselfishness and Love.

Honesty, while starting to explain this principle, the children were explained by giving some examples from his life. It is difficult to follow the path of truth and honesty, but in the end victory is found on this path. He further explained the importance of honesty, saying that even a dishonest person in the world wants the person who works for him to be honest. He also spoke about how at times, while walking this path, he too faces many challenges but through his quiet time practice and being in touch with his inner voice, he always gets the right guidance, at the right time and becomes successful by staying on this path.

After this impactful session, the children were divided into 4 groups, numbering 17-18, as per a pre-prepared list and sent out of the room to the campus for a group discussion with the volunteers handling the respective groups.

During the group discussion, the volunteers discussed with the children about their life story and both the morning sessions.

According to the mentioned time, everyone returned to the same class room. Some children came forward and shared their experiences in front of everyone when requested.

1. A child said that he was ashamed of what he had done. He used to drink a lot. He reached this place because of drug addiction and his wrong company. He said that he was very sad because no one from his family used to visit him anymore. He wished that whenever he got out now, he would never walk on the path that brought him here again.

2. The other boy said that his father is a farmer. He is old and they need him today. He wants to go out and help his father. He is also fond of writing songs and wants to become a good lyricist in the future.

It was evening time, Let's Make A Difference team successfully concluded their first day's program as per the rules and timings of the observation home.

The next day the Let's Make A Difference team reached the observation home around 10:00 am. The children of Observation home were quite excited to see the team enter. Today the children were made to sit in the same class room with their respective groups.

Starting the second day's program, the course convener explained again in more depth the importance of quiet time and honesty.

After a morning session of about one and a half hours, the children were sent outside in the same way as the previous day to practice being alone with themselves in the premises, being quiet, listening to the thoughts that came to their mind and writing them in the diaries given to them. Compared to the previous day, today the children were seen writing in their diaries with much calm, seriousness and discipline.

After 35 minutes, the children were called back to the same class room. The sessions yesterday and today had a great impact on the children. Compared to the previous day, many more children wanted to speak when they were invited to share their experiences or views.

From the experience they shared on the stage, it could be clearly inferred that those children were now getting ready for change by following the path of self-reflection and self-observation through quiet time.

A boy narrated how after his father's death, he had decided to drop out of school and earn some money by doing some odd jobs to cope with the growing financial pressure on his mother and household responsibilities. His mother wanted him to study but he did not agree. Through his first job of washing dishes, he started earning fifteen hundred rupees a month. Slowly he learned to cook and with the help of a friend he got a job of cooking food in Ranchi for ₹10000 per month. He had not returned home for several months. His mother misses him a lot. He also misses his mother a lot.

He wanted to return to his mother after earning maximum money as soon as possible. Due to this haste, he took a wrong step and had to come to this observation home. He made a promise to himself that he would never follow any path that would put him and his family in any trouble.

2. The other boy said that in his quiet time, he wrote a letter to his father. In which, he has apologized to his father, regretting his mistake.

And after sharing some experiences the kids and the Let's Make A Difference team took a brief break for lunch.

As per the scheduled time, the Let's Make A Difference team and all the children gathered in the same classroom. Taking the program forward, Sonu Arora started his session by showing a video of Ramayan's Sita Haran chapter on the television set in the room.

By showing that video clip, Sonu tried to tell that, just as Ram and Lakshman were trapped and lost Sita by the help of that golden deer, created by the demon Ravana, in the same way we do not know, that in the form of golden deer, while running to get different things, they lose their most precious thing by getting trapped in the illusion of one or the other devil.

Explaining to those kids that, they too may have lost their freedom for making a wrong choice, a wrong path, or getting the wrong thing.

Ravana would never have been able to abduct Sita, if Rama and Lakshmana were present near Sita. In the same way, when we go away from our family, teachers, our true friends, then only then the demons of our life enter our life in the form of intoxication, bad company or in any such form.

Never leave the company of your well wishers, family in your life and using your discretion, don't run after any wrong thing that attracts like the golden deer, otherwise the result will be bad. Giving this message, Sonu completed his session.

After this session all the children were sent to their respective groups for discussion like the previous day. Children in the group discussed morning quiet time, honesty and afternoon sita-haran session. During the discussion, many children shared their experiences about Ravana in their lives.

All the groups returned to the class room at the appointed time. Upon returning to the classroom, all children were given a blank piece of paper and requested to write on the paper a positive wish or promise they would like to make. After some time given to write, the piece of paper was taken from those children.

After this process, the program of the second day also ended successfully.

On the last day of the programme, the Let's Make A Difference team reached the observation home around 10:00 am. The children were very happy and excited to see the team of Let's Make A Difference. The children were making a lot of noise in happiness.

Children entering the classroom to participate in the program on the last day, pasted the paper written the previous day by them on the outside wall, on seeing the pieces of paper of positive commitments of everyone, they were very happy.

Before starting the program, the Let's Make A Difference team is pleased to learn that two children have been released the previous night, but it is also learned that two new children have been admitted to the observation room the same morning.

The Let's Make A Difference team was shocked to learn that one of the 2 children, a 17-year-old boy, was brought there to kill his mother. The last day's program started with the session "Cleaning the Jar".

In this session, he showed everyone a transparent glass jar, which appeared to be decorated with beautiful flowers from the outside.

So it was, but the water inside it was murky and mostly full of negative contaminants.

Through that jar, the course convener tried to explain how all of us are mostly busy in looking clean and beautiful on our outer surface only. And due to this false maintenance, we collect many types of toxins, bad habits, garbage of broken relationships inside us. This is the reason why we cannot be happy and content in our life.

Through this session, he explained that being clean from inside is more important than external false decorations. Together they explained that the biggest obstacle in the path of this purification is man's own ego. Man cannot kill his ego but he can definitely reduce it.

During the discussion held in the last 2 days, after understanding the life story of most of the children, the team came to the conclusion that due to easily accessible drugs and their uncontrollable anger, they are Criminals were becoming of instinct.

In the session of "Cleaning the Jar" he tried to explain both these reasons to the children with good and correct examples. Further during the session, while explaining about the sanctity of thoughts, strongly criticized the indecency of whistling by the boys that morning on seeing the girls.

After the end of the session the children were sent outside to the campus for quiet time that day as usual. The scene outside was just the opposite from the first day. There was hardly anyone that day who was not writing in his diary or getting his thoughts written in his diary with the help of Let's Make A Difference volunteers.

At the appointed time all the children gathered in the classroom. The children were asked to come forward and share their experiences. In which the children took an active part.

A child confessed in front of everyone that he had whistled on seeing the girls in the morning, for which he is extremely ashamed and wants to apologize to the girls. Saying this he told how he has tried to commit suicide several times. The wounds on his wrists, caused by blades and

other sharp objects, were evidence of his truthfulness. But after the last 3 days program, positive thinking has been created in his mind and he is inspired to live life ahead.

The second child told how he wanted to become an IPS officer. This dream was instilled in him by his father. For which he used to work very hard. His brother used to cooperate with him in this. But because of some wrong step, he had to come to this observation home.

He told how he prepared for his 11th class exam from the observation home itself and passed the exam from there with 62 percentile marks. He said that after this program he has become even more positive and motivated. After going out of this observation home, he will put in a lot of effort and how one day, he will show by becoming an IPS officer.

Before ending this session, the children were given another blank piece of paper and this time, they were asked to write down on that paper the negative thing, habit or thought they want to eliminate from their lives.

After thinking a lot, the children wrote it on their piece of paper. After which, the children along with their group were taken outside to the open premises by the volunteers, where a fire was lit at one place. In that burning fire, all those children were asked to put that piece of paper and watch the thing written on it get consumed. After this process, a different happiness and relief was visible on the faces of the children.

After sometime the Let's Make A Difference team and the children took a break for lunch.

As per the appointed time, all the children assembled in the classroom and were sent to their respective groups for the last group discussion of the programme.

The final group discussion was quite serious, as most of the children had opened up by the third day. The children wanted to speak to Let's Make A Difference volunteers in person. Let's Make A Difference activists also realized that, in fact, he felt guilty for his crimes and wanted to understand and rectify his mistake. He really wanted to step forward, to change himself.

Many of them also expressed their desire to attend Initiatives of Change Let's Make A Difference, Panchgani Center, Asia Plateau. The last day was really touching and very powerful as the whole team of Let's Make A Difference could feel that they were able to connect with most of the kids.

After a while the program moved towards its final stage, the finale. The program was concluded by Let's Make A Difference volunteers Tanu. Tanu welcomed Mrs. Reena Vedagiri, President, Jamshedpur Women's Club (JWC) and other members present at the closing ceremony. She was also welcomed by Mr. Ravi and Mr. Sunil, who came from the DC office.

During the closing ceremony, some children shared their experiences. He explained how the Jar exercise, quiet time and the four values, principles have shown him the right path. He also acknowledged how the program has given him hope for a life outside the observation home. Some even said that they got an insight into themselves and a plan for life by going through this program.

At the last stage of the closing programme, certificates were distributed to all the children by the members of JWC, Chairman and officials from the DC office, Warden of observation home.

All the team members of Let's Make A Difference were presented a memento by JWC. At the end of the event, the Let's Make A Difference team distributed some balls, frisbees and jump ropes to the children of Observation home.

The sadness, displeasure and distress that were visible on the faces of these children 3 days ago, had changed to a great extent and taken the form of hope. In the life to come, these children can rectify their mistakes and become good citizens, with the thought that the team of Let's Make A Difference bid them farewell and successfully concluded their program.

Leaving the observation home, the Let's Make A Difference team went to a nearby orphanage. Where sports equipment, fruits and juices were distributed to the children there. Mr. Viral Mazumdar and the president and members of Jamshedpur Women's Club talked a lot with those children and after some time everyone said goodbye to them.

**Annexure 1 - Press Reports**

# ऑब्जर्वेशन होम में नैतिक पुनरुत्थान पर कार्यशाला का आयोजन

**जमशेदपुर:** जमशेदपुर वीमेंस क्लब और लेट्स मेक ए डिफरेंस की ओर से घाघीडीह ऑब्जर्वेशन होम में आज से तीन दिवसीय नैतिक पुनरुत्थान कार्यक्रम की शुरुआत हुई. इस कार्यक्रम में पंचगनी, दिल्ली, नागपुर एवं कोलकाता से लोग शामिल हुए. इस दौरान बच्चों से उनकी गलतियों के बारे में पूछा गया. बच्चों ने भी गलत कार्यों पर अफसोस जताया. कार्यक्रम के पहले दिन डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट भी मौजूद थे. मौके पर विरल मजूमदार, श्रद्धा अग्रवाल और ममता अग्रवाल मौजूद थीं.

# संप्रेक्षण गृह के बच्चों ने कहा- बाहर आकर दूसरी जिंदगी जीना चाहते हैं

**जमशेदपुर** | घाघीडीह संप्रेक्षण गृह में शुक्रवार को लेट्स मेक अ-डिफरेंस और जमशेदपुर वीमेंस क्लब के संयुक्त तत्वावधान में नैतिक पुनरुत्थान का कार्यक्रम आयोजित हुआ। इसमें पंचगनी, दिल्ली, नागपुर एवं कोलकाता के लोग भी शामिल हुए। कार्यक्रम में नैतिक मूल्यों पर बातचीत की गई। ऑब्जर्वेशन होम में रह रहे बच्चों से पूछा गया कि क्या तुम अपनी जिंदगी ईमानदारी से जीते हो, क्या तुमने बेईमानी की है अगर की है तो क्या तुम्हें गलती का आभास होता है। इस कार्यक्रम के माध्यम से कई बच्चे मंच पर आए।बच्चों ने बताया कि उन्हें बुरा लगता है कि उन्होंने ऐसे कार्य किए हैं जिनकी वजह से वह आज उस ऑब्जर्वेशन होम में है। अपने परिवार से दूर हैं और अपने मां बाप को उन्होंने दुखी किया हैं। हम बाहर जाकर एक दूसरी जिंदगी जीना चाहते हैं।

शार्प भारत

खबर

# Jamshedpur Ghaghidih Observation Home Workshop : घाघीडीह प्रेक्षण गृह में दो दिवसीय नैतिक पुनरुत्थान कार्यक्रम शुरू, लेट्स मेक अ डिफरेंस व जमशेदपुर वूमंस क्लब कर रहे दो दिनी कार्यक्रम

By **Team Sharp Bharat** - फ़रवरी 24, 2023

**जमशेदपुर :** घाघीडीह ऑब्जर्वेशन होम में 'लेट्स मेक अ डिफरेंस' एवं जमशेदपुर वूमंस क्लब की तरफ से एक नैतिक पुनरुत्थान कार्यक्रम का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में शामिल होने के लिए पंचगनी, दिल्ली, नागपुर एवं कोलकाता से लोग पहुंचे. इस कार्यक्रम में नैतिक मूल्यों पर बातचीत हुई, जैसे कि ईमानदारी, निःस्वार्थ भावना, प्रेम एवं नीरवता. **(नीचे भी पढ़ें)**

सबसे पहले ईमानदारी पर सवाल उठाए गए और ऑब्जर्वेशन होम में रह रहे बच्चों से पूछा गया कि क्या तुम अपनी जिंदगी ईमानदारी से जीते हो, क्या तुमने बेईमानी की है, अगर की है तो क्या तुम्हें गलती का आभास होता है. इस कार्यक्रम के माध्यम से कई बच्चे मंच पर आये और उन्होंने बताया कि उन्हें बुरा लगता है कि उन्होंने ऐसे कार्य किये हैं, जिनकी वजह से वे आज उस ऑब्जर्वेशन होम में हैं. अपने परिवार से दूर हैं, अपने मां बाप को उन्होंने दुखी किया है और समाज के लिए बोझ बन गए हैं. बाहर जाकर एक एक दूसरी जिंदगी जीना चाहते हैं व पढ़ना चाहते हैं, कुछ बनना चाहते हैं. यह कार्यक्रम का पहला दिन था और इसके दौरान डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट भी मौजूद रहे और उन्होंने अपने से इन बच्चों से सुना कि किस तरह से वह अपनी जिंदगी में बदलाव लाना चाहते हैं. दो दिवसीय कार्यक्रम का शनिवार को समापन होगा. इसमें  कार्य के मुख्य संचालक विरल मजूमदार दिल्ली से आए हैं और जमशेदपुर वीमेंस क्लब की श्रद्धा अग्रवाल और ममता अग्रवाल भी मौजूद रहीं.

Lagatar

# जमशेदपुर : बाल संप्रेक्षण गृह में तीन दिवसीय नैतिक पुनरुत्थान कार्यक्रम शुरू

by **Lagatar News** — 24/02/2023

कार्यक्रम के दौरान मौजूद लोग.

**Jamshedpur (Rohit Kumar) :** जमशेदपुर के घाघीडीह स्थित बाल संप्रेक्षण गृह में लेट्स मेक ए डिफरेंस और जमशेदपुर विमेंस क्लब की ओर से तीन दिवसीय नैतिक पुनरुत्थान कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है. पंचगनी, दिल्ली, नागपुर एवं कोलकाता से लोग शामिल हुए. इस दौरान मुख्य अतिथि के रूप में मुख्य संचालक दिल्ली से आए विरल मजूमदार मौजूद रहे. इनके अलावा उपायुक्त विजया जाधव भी मौजूद रहीं. इस कार्यक्रम में नैतिक मूल्यों पर बातचीत की गई जैसे कि इमानदारी, निस्वार्थ भावना, प्रेम एवं नीरवता. सबसे पहले ईमानदारी पर लेकर सवाल उठाए गए और ऑब्जर्वेशन होम में रह रहे बच्चों से पूछा गया कि क्या तुम अपनी जिंदगी ईमानदारी से जीते हो, क्या तुमने बेईमानी की है अगर की है तो क्या तुम्हें गलती का आभास होता है.

इस कार्यक्रम के माध्यम से कई बच्चे मंच पर आए और उन्होंने बताया कि उन्हें बुरा लगता है कि उन्होंने ऐसे कार्य किए हैं जिनकी वजह से वह आज उस ऑब्जर्वेशन होम में हैं. अपने परिवार से दूर हैं अपने मां बाप को उन्होंने दुखी किया है और इस समाज के लिए एक बोझ बन गए हैं. बाहर जाकर एक नई जिंदगी जीना चाहते हैं वह पढ़ना चाहते हैं कुछ बनना चाहते हैं. कार्यक्रम में मुख्य रूप से जमशेदपुर विमेंस क्लब की ओर से श्रद्धा अग्रवाल और ममता अग्रवाल भी मौजूद रहीं.

T : (02168) 240241/2 | E : IOFC.LMAD@GMAIL.COM | W : WWW.LMAD.IN / WWW.IN.IOFC.ORG
ASIA PLATEAU, PANCHGANI - 412 805, DIST. SATARA, MAHARASHTRA

REGISTERED IN 1961 UNDER THE BOMBAY PUBLIC TRUST ACT, 1950. MEMBER INITIATIVES OF CHANGE - INTERNATIONAL